

## मॉड्यूल 7: सामाजिक व्यवहार परिवर्तन—बाल संरक्षण

### सत्र 1: संचार को परिभाषित करना

अवधि: 5:03 मिनट

#### सत्र 1.3 संचार को परिभाषित करना

सत्र के उद्देश्य

सत्र के अंत में, आप जान पाएंगे कि

- संचार क्या है?
- दोतरफा संचार और एकतरफा संचार क्या हैं?
- शाब्दिक और गैर शाब्दिक संचार क्या हैं?
- संचार चक्र क्या है?

संचार एक व्यक्ति से दूसरे या अन्य को सूचना (विचारों, भावनाओं, ज्ञान, डेटा और कौशल आदि सहित) के आदान-प्रदान की एक प्रक्रिया है।

संचार रोजमर्रा की जिंदगी का एक तथ्य है। हर दिन, हम सुनने, बोलने, पढ़ने या लिखने की गतिविधियाँ करते हैं या चेहरे के भाव, हावभाव, हाथ और भुजाओं की गति, शरीर की गतिविधियों और भावनाओं का सहारा लेते हैं।

#### संचार चक्र और उसके तत्व

संचार एक तरफा या दो तरफा प्रक्रिया हो सकती है। आइये पहले इसके अन्तर को समझते हैं।

**एक तरफा संचार प्रक्रिया:** जब सूचना एक दिशा में संचारित होती है तो उसे एक तरफा संचार के रूप में जाना जाता है। इस संचार प्रक्रिया में, सूचना भेजने वाले से प्राप्त करने वाले तक जाती है जिसमें प्राप्त करने वाला कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है।

**दो तरफा संचार प्रक्रिया:** दो तरफा संचार तब होता है जब प्राप्त करने वाला संदेश देने वाले को अपनी प्रतिक्रिया देता है। संचार प्रक्रिया मूल रूप से दो तरफा प्रक्रिया को बताती है जिससे संदेश भेजने वाला और प्राप्त करने वाला दोनों एक दूसरे के विचार या राय को समझ सकते हैं।

#### दो तरफा संचार के तत्व

##### स्रोत

स्रोत सन्देश का जन्मदाता होता है

स्रोत एक व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह या कोई संस्था या संगठन हो सकता है। संचार नियोजन प्रक्रिया में स्रोत महत्वपूर्ण है, क्योंकि संदेशों की विष्वसनीयता को उसके स्रोत से जोड़कर देखा जाता है।

## संदेश

संदेश वह विचार है जिसे संप्रेषित किया जा रहा है। संदेश सरल, सीधा, स्पष्ट और सटीक होना चाहिए। संदेश की सामग्री लक्षित समूह के लिए स्पष्ट होनी चाहिए न कि कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं की धारणाओं पर आधारित होनी चाहिए।

## माध्यम

माध्यम वह है जिसके द्वारा संदेश स्रोत से प्राप्तकर्ता/दर्शक तक पहुंचता है। माध्यम पारस्परिक हो सकता है जहां संदेश सीधे स्रोत से प्राप्तकर्ता तक जाता है या सामूहिक संचार जहां कई प्राप्तकर्ता एक या कई स्रोत से संदेश प्राप्त करते हैं। उनमें मीडिया शामिल हो सकता है, जैसे प्रिंट, टेलीफोन या सेटलाइट प्रसारण या रेडियो।

## प्राप्तकर्ता

विभिन्न प्रकार के संदेशों के लिए प्राप्तकर्ता

कौन है? प्राप्तकर्ता की पहचान करने के लिए उन्हें भाग में बांटना या समूह बनाना आवश्यक है। लक्षित समूह या दर्शकों के कुछ उदाहरण: बच्चे, माता-पिता, मित्र हो सकते हैं।

## फीडबैक

फीडबैक संचार का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण तत्व है। फीडबैक स्रोत या प्रेषक के लिए प्राप्तकर्ता का जवाब या प्रतिक्रिया है। प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया प्रेषक के लिए उपयोगी जानकारी होती है जो संदेशों को संशोधित करने में मदद करते हैं। अनुभवी संचारकर्ता हमेशा प्रतिक्रिया के प्रति संवेदनशील होते हैं और संदेशों को लगातार संशोधित करते हैं जो वे लक्षित समूह या दर्शकों से देखते या सुनते हैं। दर्शकों या प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया के बिना संचार एक तरफा हो जाता है।

## शाब्दिक एवं गैर-शाब्दिक संचार

### शाब्दिक संचार

शब्दों की सहस्यता से संचार करने को शाब्दिक संचार कहते हैं

क्या बोलना है, कब बोलना है, कैसे बोलना है, और किन उद्देश्यों के साथ रखना है, यह वक्ता को स्पष्ट होना चाहिए। परिस्थिति भिन्न होती है और संदर्भ भिन्न होते हैं। बोले गये शब्द स्पष्ट होने चाहिए और स्थानीय भाषा का उपयोग करना चाहिए, सुनने में स्पष्ट और विषय से जुड़ा हुआ और समझने में आसान होना चाहिए। बच्चों के साथ संवाद करते समय खासकर तकनीकी शब्दों और शब्दजाल के उपयोग से बचना चाहिए। शाब्दिक संचार एक कला और कौशल दोनों है जो अनुभव से मजबूत होता है।

### गैर-शाब्दिक संचार

गैर-शाब्दिक संचार बिना बोले या लिखित शब्दों का उपयोग किए बिना संदेश भेजने और प्राप्त करने की प्रक्रिया है। हम चेहरे के भाव, आवाज के स्वर, हाव-भाव से भी संवाद करते हैं।

यह जानना ज़रूरी है कि बच्चे गैर-मौखिक रूप से क्या संवाद करते हैं, उदाहरण के लिए, भय, शर्मिंदगी, बेचैनी, शर्म, क्रोध, आक्रोश।

गैर-शाब्दिक संचार कुछ संकेतों को दिखाकर किया जाता है जैसे भौंहे चढ़ाना, सिर हिलाना, शरीर के अंगों को सांकेतिक रूप में हिलाना-ढुलाना, चेहरे के भाव, हावभाव, हंसी, उदासी और क्रोध

कभी-कभी एक भी शब्द नहीं कहा जाता है लेकिन मौन रहकर भी अपनी बात को व्यक्त किया जा सकता है